

आरव और तिरंगी पतंग का रहस्य



इस पुस्तक के बारे में

On the rooftops of Old Delhi, eight-year-old Aarav finds a faded tricolour kite tucked inside his grandmother's old trunk — with a name and a date from 1947 stitched into its tail. Chasing the kite's story across Chandni Chowk's spice lanes, kite markets and the shadow of the Red Fort, he uncovers the tale of a girl who flew that same kite on India's very first Independence Day. By the fifteenth of August, Aarav knows exactly whose hands must hold the string this year.



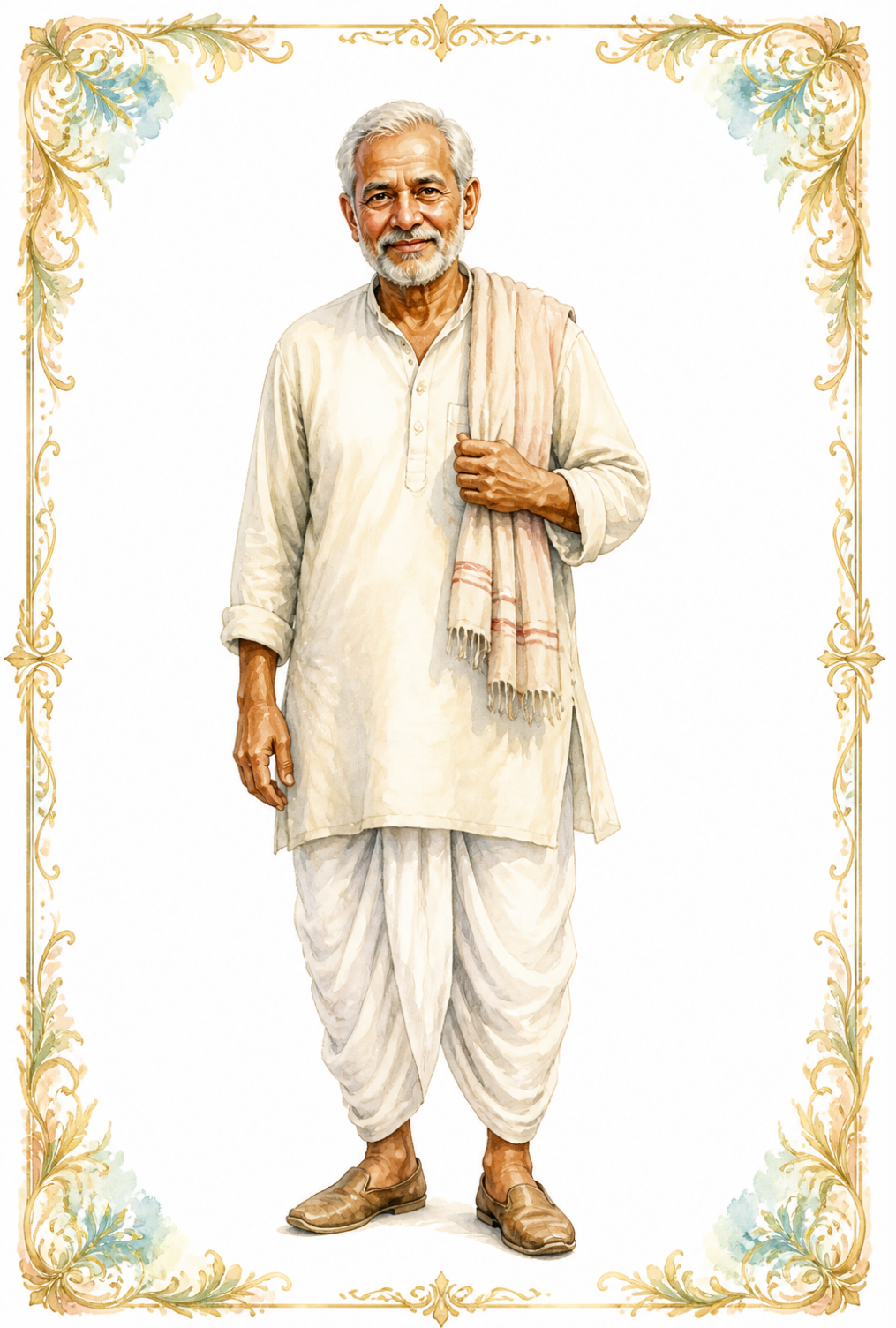
आरव



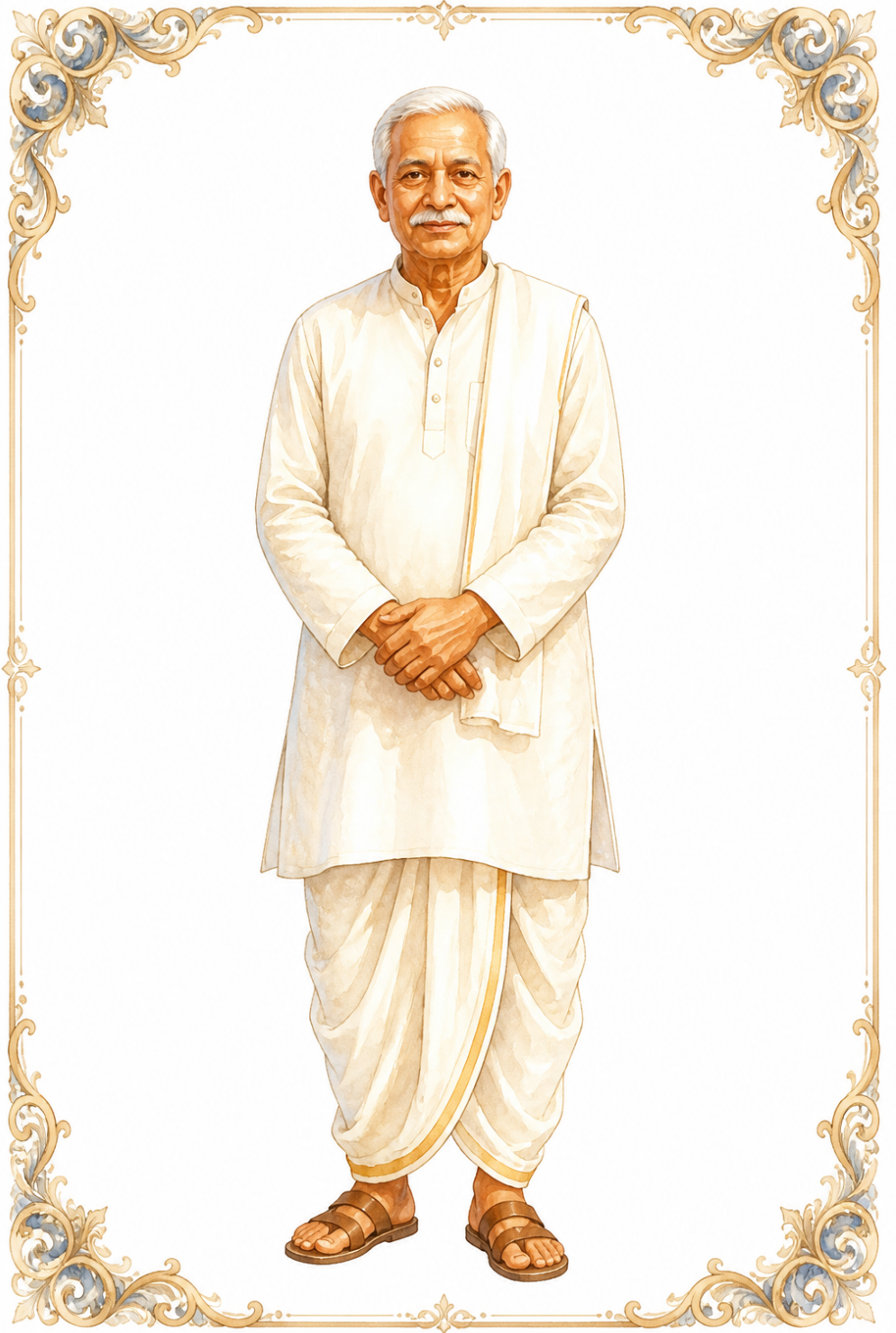
दादी



मेहर



करीम चाचा



गोपालदास जी

संदूक की फीकी पतंग

पुरानी दलिली की छतों पर अगस्त की शाम चमक रही थी। कहीं लाल पतंग उठी, कहीं पीली पतंग गोता खा रही थी। ढोलक, कबूतरों के पंख और दूर जाती मेट्रो की आवाज़ें हवा में घुली थीं। आठ साल का आरव अपनी पतंग की डोर सुलझाते हुए सोच रहा था कि इस बार पंद्रह अगस्त पर वह सबसे ऊँची पतंग उड़ाएगा।

तभी दादी ने सीढ़ियों के पास रखे पुराने संदूक को धूप देखाने को कहा। संदूक भारी था। उसका पीतल का ताला खट से खुला। भीतर रेशमी साड़ियाँ, चट्टियों का बंडल और चंदन की हल्की सुगंध थी। सबसे नीचे अखबार में लपिटी एक फीकी पतंग रखी थी। उसके तीन रंग समय की धूल के नीचे भी साफ़ देखि रहे थे।

आरव ने पतंग को बहुत धीरे उठाया। कागज़ सूखा था और बाँस की कमानी टेढ़ी हो चुकी थी। लंबी सूती पूँछ पर नीले धागे से एक नाम कढ़ा था—सरोज। उसके नीचे छोटे अंकों में 1947 लिखा था। आरव ने उत्साह से दादी को बुलाया, पर नाम देखते ही दादी की मुस्कान पल भर के लिए रुक गई।

दादी ने बस इतना कहा कि कुछ पतंगें हवा से अधिक यादे सँभालती हैं। फिर उन्होंने संदूक बंद कर दिया। आरव ने देखा कि पतंग की एक गाँठ में लाल मोम का नन्हा टुकड़ा और मसाले का पीला चूरा फँसा था। उसकी दोस्त मेहर ने उसे सूँघकर कहा कि यह हल्दी और लौंग जैसी महक है। पहला सुराग उन्हें चांदनी चौक की ओर बुला रहा था।



छत पर
प्रतंग उड़ाना
मना है!

पुरानी दिल्ली
Old Delhi

मसाला गली की महक

अगली सुबह आरव और मेहर पतंग को कपड़े के थैले में रखकर चांदनी चौक पहुँचे। रक्शो की घंटियाँ टनटन कर रही थीं। दुकानदार पुकार रहे थे। जलेबी की मीठी भाप और पराठों की गरम खुशबू हवा में तैर रही थी। पर पतंग की गाँठ से आती तीखी महक उन्हें धीरे-धीरे मसाला गली की संकरी राह में ले गई।

गली में लाल मर्च के ढेर अंगारों जैसे चमक रहे थे। हल्दी सोने की धूल जैसी थी। काली मर्च देखकर मेहर को छींक आई। एक छींक, फिर दूसरी, फिर इतनी बड़ी तीसरी छींक कि आरव का थैला हलि गया। पास बैठी दुकानदार शबनम अम्मा हँसीं और उन्होंने पतंग की पूँछ पर लगा पीला चूरा ध्यान से देखा।

शबनम अम्मा ने बताया कि चूरे में हल्दी के साथ सूखा केवड़ा मिला है। ऐसा मश्रण उनकी पुरानी दुकान में कागज़ को कीड़ों से बचाने के लिए लगाया जाता था। लाल मोम पर आधा नशान भी था। उन्होंने अलमारी से एक पुरानी मुहर निकाली। दोनों टुकड़े मिलाने पर फूल और चाँद वाला एक ही चनिह बन गया।

पुराने बहीखाते में उसी मुहर के सामने एक पंक्ति मिली—तीन रंगों की पतंग, नीली गाँठ, करीम मांझेवाले के लिए। तारीख अगस्त 1947 की थी। शबनम अम्मा ने उन्हें लाल कुआँ जाने वाली दशा बताई। आरव ने बही की नकल अपनी कॉपी में बनाई। अब उनके पास नया नाम था और नीली गाँठ का रहस्य भी गहरा गया था।



चांदनी चौक
मसाला गली

किशन लाल
मसाले वाले

खुशबू ही
हमारी पहचान

धनिया

हल्दी

लाल
मिर्च

नीली गाँठ का कारीगर

लाल कुआँ की पतंग गली रंगों से भरी थी। छोटी दुकानों की छतों से पतंगों के गुच्छे झूल रहे थे। आरव और मेहर ने करीम मांझेवाले का नाम कई लोगों से पूछा। आखिर एक नीले दरवाजे के पीछे उन्हें बुजुर्ग करीम चाचा मिले। वे बच्चों के लिए सुरक्षित सूती डोर पर चावल की मुलायम लेई चढ़ा रहे थे।

करीम चाचा ने फीकी पतंग देखते ही अपने चश्मे को ठीक किया। उन्होंने कहा कि इसकी कमानी उनके पति के हाथ की बनी लगती है। नीली गाँठ साधारण गाँठ नहीं थी। पुराने कारीगर ऐसी तीन गाँठें केवल खास पतंग पर लगाते थे, ताकतिय हवा में पूँछ न खुले। उन्होंने गाँठ पलटी तो भीतर कपड़े का छोटा अंक दिखाई दिया।

अंक था 47-15। करीम चाचा अपनी पुरानी संदूकची से पतली बही निकाल लाए। उसमें यही अंक एक पतंग के सामने लिखा था। खरीदार का पूरा नाम धुँधला था, पर पहला अक्षर स था। अगली पंक्ति में लिखा था—भोर की उड़ान, कलि की दशा। नीचे नूर पतंगघर की बैंगनी मुहर लगी थी।

करीम चाचा ने टेढ़ी कमानी को अभी न छेड़ने की सलाह दी। पुराना कागज़ जल्दी फट सकता था। उन्होंने आरव को मुलायम सूती डोर की छोटी चरखी दी और कहा कि पतंग बचाना जीतने से बड़ा काम है। जाते समय हवा ने दुकान की घंटी बजाई। नया सुराग उन्हें पतंग बाजार के बंद पड़े नूर पतंगघर तक ले जा रहा था।



बंद पतंगघर की पर्ची

नूर पतंगघर अब दुकान नहीं था। उसका हरा शटर बंद था और ऊपर का नाम धूप से फीका पड़ चुका था। पास के चायवाले ने बताया कपिराने मालकि का सामान पीछे की कोठरी में रखा है। अनुमत लेकर आरव, मेहर और करीम चाचा भीतर गए। धूल में उनके पैरों के नशान ऐसे बन रहे थे जैसे कोई नक्शा खचि रहा हो।

कोठरी में बाँस की तीलियाँ, गोल चरखियाँ और कागज़ के बंडल थे। एक दीवार पर पतंगों के आकार बने थे। आरव ने तरिगी पतंग को चत्तिरों के पास रखा। उसकी नोक बिल्कुल एक खास साँचे से मली। साँचे के नीचे छोटा सूरज बना था और उसके भीतर वही अंक लिखा था—47-15।

मेहर को लकड़ी के साँचे की दरार में मुड़ा कागज़ मिला। वह बकिरी की पर्ची थी। उस पर तीन चीज़ें लिखी थीं—सफेद कागज़, हरा कनिरा और केसरिया रंग। पाने वाले के नाम में फरि केवल सरो... पढ़ा जा रहा था। पते की जगह लिखा था—घंटेवाली हवेली की तीसरी छत।

अचानक बाहर अज़ान की धुन और मंदिर की घंटी लगभग साथ सुनाई दी। करीम चाचा मुस्कराए। उन्होंने कहा कपिरानी दलिली में रास्ते कभी अकेली आवाज़ से नहीं मिलते। चायवाले ने घंटेवाली हवेली की दशा बता दी। आरव ने पर्ची सुरक्षित रखी। अब उन्हें उस तीसरी छत और अधूरे नाम के पीछे जाना था।



घंटेवाली हवेली की तीसरी छत

घंटेवाली हवेली का बड़ा दरवाज़ा अब नीले रंग का था। उसके आँगन में सचमुच एक पुरानी घंटी लटक रही थी। देखभाल करने वाली फ़रीदा खाला ने बच्चों की बात ध्यान से सुनी। फरि वह उन्हें सँकरी सीढ़ियों से तीसरी छत पर ले गई। हर मोड़ पर कबूतर फड़फड़ाते और मेहर चौककर आरव के पीछे छपि जाती।

तीसरी छत से लाल कल्ले की दीवारें दूर दखाई देती थीं। एक कोने में लोहे का पुराना छल्ला लगा था। फ़रीदा खाला ने बताया कल्लोग कभी चरखी को उसी से बाँधते थे। छल्ले के नीचे चूने पर तीन रंगों की हल्की लकीरें थीं। आरव ने पानी की बूँद लगाई तो एक छोटा तीर उभर आया।

तीर छत की मुंडेर में लगी ढीली ईंट की ओर था। ईंट के पीछे टीन की डबिया मली। उसमें पतंग नहीं, सूख चुका गोद और अखबार का एक टुकड़ा था। टुकड़े पर अगस्त 1947 की तारीख और कुछ शब्द बचे थे—बच्चों की भोर सभा... लाल कल्ले के पास... पुस्तकवाले गोपालदास।

फ़रीदा खाला को याद आया कलिल कल्ले के पास एक बहुत पुरानी कतिाबों की दुकान अब भी चलती है। आरव को लगा रहस्य ने लंबी छलाँग लगाई है। तभी तेज़ झोंका आया और उसकी कॉपी उड़ने लगी। मेहर ने समय पर पकड़ ली। दोनों हँस पड़े, पर टीन की डबिया उन्होंने कसकर थामे रखी।



कागज़ के नीचे लखी बात

दोपहर को बादल घरि आए। आरव पतंग लेकर घर पहुँचा तो कागज़ का एक कोना हल्का नम हो गया था। वह घबरा गया। दादी ने डाँटा नहीं। उन्होंने सूखे कपड़े के बीच पतंग रखी और ऊपर हल्की कतिबे जमा दी। उनकी उँगलियाँ हर मोड़ को पहचानती हुई लग रही थीं, पर आरव के पूछने पर वे चुप रही।

पतंग सूखने लगी तो पीछे चपिका एक पतला कागज़ ढीला हुआ। दादी की अनुमति से आरव ने उसे बहुत सावधानी से उठाया। नीचे नीली स्याही में छोटा वाक्य लिखा था—जब लाल दीवारे सुबह सुनें, कतिबों में तस्वीर ढूँढ़ना। साथ में खुले पन्नों वाली पुस्तक का नन्हा चित्र बना था।

आरव ने दादी से पूछा कि क्या वह सरोज को जानती हैं। दादी ने खड़की के बाहर उड़ते कबूतरों को देखा। उन्होंने कहा कि पहले सारे सुराग इकट्ठे कर लो, क्योंकि आधी याद कभी-कभी गलत कहानी सुना देती है। फिर उन्होंने पुरानी पतंग पर चावल की लेई से बहुत महीन मरम्मत करना सिखाया।

शाम तक पतंग फिर समतल हो गई। आरव को समझ आया कि खोजने का अर्थ चीज़ों को जल्दी-जल्दी खोलना नहीं होता। कभी रुकना भी खोज का हिस्सा है। उसने नीली लिखावट अपनी कॉपी में उतारी। लाल दीवारे, सुबह की आवाज़ और कतिब की तस्वीर—तीनों संकेत पुराने पुस्तक-वकिरेता की ओर इशारा कर रहे थे।



लाल कलैं के पास की तस्वीर

अगली सुबह लाल कलैं के पास हवा में भुट्टे की खुशबू थी। बसों के हॉर्न और पर्यटकों की बातें मलिकर बड़ा शोर बना रही थी। एक सँकरी दुकान के ऊपर धुँधला बोर्ड लगा था—गोपालदास पुरानी पुस्तकें। भीतर कतिबे दीवार से छत तक चढ़ी थीं। उनके बीच बैठे गोपालदास जी स्वयं किसी शांत कतिब जैसे लगे।

उन्होंने अखबार का टुकड़ा देखते ही मोटा चश्मा पहना। गोपालदास उनके दादा थे, पर दुकान और पुराने कागज़ अब उनके पास थे। उन्होंने सीढ़ी खसिकाई और सबसे ऊपरी खाने से लाल कपड़े में बँधी पुस्तक उतारी। पुस्तक का नाम था भोर सभा स्मृत-पंजी। उसके पन्ने हल्दी जैसे पीले हो चुके थे।

पंजी में बच्चों द्वारा लखी कवतिाँ, छोटे चत्तिर और पतंगों के नमूने चपिके थे। एक खाली जगह पर 47-15 लखा मलिा। उसके पास काले-सफेद रंग की तस्वीर थी। तस्वीर में कई बच्चे छत पर खड़े थे और बीच की एक लड़की तरिगी पतंग उठाए थी। उसका चेहरा पतंग की छाया में छपिा था।

तस्वीर के पीछे पेंसिल से लखिा था—सरोज, अपनी सबसे छोटी चरखी के साथ। नीचे एक गोल नशिान और शब्द थे—वदियालय बाल सभा। गोपालदास जी ने बताया कि उस पुराने वदियालय के अभलिैख अब दरयिागंज की एक पुस्तकालय में सुरक्षति है। आरव ने तस्वीर की प्रतलिी। रहस्य की लड़की पहली बार उसके सामने आकार लेने लगी थी।

पुरानी
किताबों
की दुकान

स्मृति-
पंजी



सूरज समूह का रजसिटर

दरयागंज की पुस्तकालय में ठंडी शांति थी। बाहर सड़क पर हॉर्न बज रहे थे, पर भीतर केवल पन्नों की सरसराहट सुनाई देती थी। पुस्तकालयाध्यक्ष ने आरव की कॉपी और तस्वीर देखी। उन्होंने बच्चों को साफ़ हाथों से पुराने अभिलेख देखने की अनुमति दी। मेहर को मोटी सूची मिली और आरव को धूलभरा वदियालय रजसिटर।

रजसिटर में कई सरोज थीं। एक सरोज गुप्ता, एक सरोज बानो और एक नाम पानी से फैला हुआ था। आरव नरिश हुआ। तभी मेहर ने तस्वीर में लड़की की कमीज़ पर बने छोटे सूरज को देखा। वही सूरज नूर पतंगघर के साँचे पर भी था। सूची में सूरज समूह नाम की बाल सभा अलग दर्ज थी।

सूरज समूह के पन्ने पर लिखा था कि बच्चों ने पंद्रह अगस्त 1947 की भोर में छतों से रंगीन पतंगें उड़ाने की योजना बनाई। नीचे काम बाँटे गए थे। किसी ने रंग तैयार किया, किसी ने गीत की प्रचियाँ। सरोज नाम की लड़की के सामने लिखा था—मुख्य पतंग और छोटी लकड़ी की चरखी।

उसी पन्ने से एक नीला धागा बँधा था। धागे के सरि पर पते का आधा हस्सा बचा था—गली अनार, मकान सात। पुस्तकालयाध्यक्ष ने बताया कि पुराने नक्शे में यह गली अब दूसरे नाम से मलि सकती है। आरव और मेहर ने नक्शा खोजा। गली उसी इलाके में थी जहाँ दादी का बचपन बीता था।



दरियागंज
पुस्तकालय
स्थापना
1891

भारतीय इतिहास
प्राचीन विज्ञान

पुराने
किस्से

नक्शे
और
यातायात
लोककथाएँ

गली अनार का पोस्टकार्ड

पुराने नक्शे को नए नक्शे से मलाना आसान नहीं था। एक सड़क चौड़ी हो चुकी थी और दो गलियाँ जुड़ गई थीं। आरव ने लाल पेंसिल से रास्ता बनाया। मेहर ने हर मोड़ के पास कोई नशानी लखी—इत्र की दुकान, पीपल का पेड़ और हरे दरवाजे वाली बेकरी। आखिर वे उस जगह पहुँचे जसै कभी गली अनार कहा जाता था।

मकान सात अब छोटी सलाई की दुकान था। मालकि ने पछिली दीवार में बनी बंद अलमारी दिखाई। मरम्मत के समय उसमें पुराने पोस्टकार्ड मल्लि थे। एक कार्ड पर पतंग की नन्ही आकृति और सूरज का नशान था। कार्ड सूरज समूह की सरोज के नाम था, पर उपनाम फरि पानी के दाग में मटि चुका था।

कार्ड पर लिखा था कभोर की उड़ान के बाद चरखी को सुरक्षति रखना। आगे की पंक्ति थी—जब तुम बड़ी हो जाओ, अपने घर के किसी बच्चे को यह डोर देना। नीचे भेजने वाले के रूप में केवल मतिर नसीम लिखा था। कार्ड के कोने में लकड़ी की चरखी का चित्र और पाँच पंखुड़ियों वाला फूल बना था।

आरव ने फूल पहचान लिया। दादी के संदूक की पीतल की चाबी पर भी पाँच पंखुड़ियाँ थीं। उसका दलि तेजी से धड़का, मगर उसने जल्द नषिर्ष नहीं निकाला। दादी ने आधी याद से बचने को कहा था। कार्ड के नीचे एक और संकेत था—आवाज़ सुरक्षति है, रेडियोवाले इदरीस से पूछना। अगला सुराग सुनाई देने वाला था।

पुरानी दिल्ली
सिलाई-दुकान



रील में बंद हँसी

इदरीस रेडियो सर्विस की दुकान में पुराने रेडियो कतार से रखे थे। कोई लकड़ी का था, कोई हरे कपड़े से ढका। इदरीस साहब ने पोस्टकार्ड पर लखि नसीम का नाम पढ़ा तो उनकी आँखें चमक उठीं। नसीम उनकी बड़ी बहन थीं। उन्होंने वर्षों पहले आवाज़ों की एक छोटी रील दुकान की अलमारी में रखी थी।

बहुत खोजने पर धातु का गोल डब्बिबा मिला। इदरीस साहब ने पुरानी मशीन ठीक की। पहिया घूमने लगा और खरखराहट के बीच बच्चों की आवाज़ उभरी। वे भोर, नई सुबह और मलिकर पतंग उड़ाने की बातें कर रहे थे। फरि एक लड़की हँसी और बोली कि उसकी छोटी चरखी उससे भी तेज़ दौड़ती है।

आरव को वह हँसी जानी-पहचानी लगी। उसने रिकॉर्डिंग दोबारा सुनी। अंत में नसीम की आवाज़ आई—सरोज, पतंग संभालो, हवा लाल कलैं की ओर मुड़ रही है। फरि घंटी बजी और आवाज़ बंद हो गई। डब्बिबे पर पाँच पंखुड़ियों वाला वही फूल था, साथ में एक संख्या लखी थी—कमरा 12।

इदरीस साहब ने समझाया कि कमरा 12 पास के पुराने सामुदायिक भवन में था, जहाँ बच्चे मलिकर कार्यक्रम बनाते थे। भवन अब बंद था, पर उसकी वस्तुएँ मोहल्ले के संग्रह-कक्ष में रखी थीं। लौटते समय आरव ने दादी की हँसी याद की। समानता साफ़ थी, फरि भी अंतमि उत्तर अभी एक बंद दरवाज़े के पीछे था।



इंदरीस रेडियो

कमरा बारह की कढ़ाई

मोहल्ले का संग्रह-कक्ष खवियार को खुला। दीवारों पर पुराने बर्तन, खलौने और तस्वीरें टँगी थीं। कमरा 12 की वस्तुएँ एक भूरे बक्से में थीं। आरव और मेहर ने दस्ताने पहने। उन्हें गीतों की पर्चियाँ, रंग के सूखे प्याले और लकड़ी की कई चरखियाँ मिलीं, पर पोस्टकार्ड पर बनी छोटी चरखी उनमें नहीं थी।

बक्से के तल में कपड़े की पट्टी मिली। उस पर नीले धागे से फूल काढ़ा गया था। कढ़ाई बिल्कुल पतंग की पूँछ पर लखि सरोज नाम जैसी थी। पट्टी के पीछे अभ्यास के टाँके थे—पहले टेढ़े, फिर सीधे। साथ रखी पर्ची में लिखा था कि सरोज ने पतंग की पूँछ पर अपना नाम स्वयं काढ़ा।

एक छोटी सूची ने कहानी को और साफ़ किया। उसमें दर्ज था कि मुख्य पतंग भोर में खूब ऊँची उड़ी, फिर सुरक्षित उतार ली गई। उसे सरोज अपने घर ले गई। चरखी उसकी माँ ने संभालकर रखी। अंतमि पंक्ति धुँधली थी, पर आरव पढ़ सका—पुराना संदूक, फूल वाली चाबी।

अब सारे रास्ते दादी के संदूक पर लौट रहे थे। मेहर ने उत्साह में कहा कि रहस्य मलि गया, पर आरव ने सरि हलाया। उन्हें अभी सरोज का पूरा नाम और छोटी चरखी नहीं मिली थी। उसने तय किया कि दादी पर सवालों की बारिश नहीं करेगा। पहले संदूक को उनकी अनुमति से, एक बार फिर ध्यान से देखा जाएगा।



संदूक का छपि खाना

उस शाम दादी तुलसी को पानी दे रही थी। आरव ने सारी खोज धीरे-धीरे सुनाई। उसने पर्चियाँ, नक्शे और तस्वीर की प्रत उनके सामने रखी। दादी ने हर वस्तु को लंबे समय तक देखा। उनकी आँखों में खुशी भी थी और कोई बहुत पुरानी कमी भी। फरि उन्होंने फूल वाली चाबी आरव की हथेली पर रख दी।

संदूक खुला तो इस बार दादी ने साड़ियाँ स्वयं हटाईं। नीचे लकड़ी का तला था। आरव ने कनारों पर उँगली फेरी और एक छोटा उभरा फूल पाया। उसे दबाते ही पतली पट्टी ऊपर उठी। छपि खाने में कपड़े की थैली, एक छोटी लकड़ी की चरखी और नीले आवरण वाली डायरी रखी थी।

चरखी पर समय के नशान थे, फरि भी उसका हत्था चकिना था। उस पर 15-8-47 और पाँच पंखुड़ियों वाला फूल खुदा था। डायरी के पहले पन्ने पर पूरा नाम नमी से मटि गया था। केवल सरोज साफ़ था। अगले पन्ने आपस में चपिके थे, इसलिए दादी ने उन्हें जल्दबाज़ी से खोलने से मना किया।

दादी ने कहा कि धैर्य से रखा गया कपड़ा नमी खींच लेगा। डायरी सुबह तक खुल सकेगी। आरव ने चरखी को दोनों हाथों में लिया। वह हल्की थी, पर उसे लगा जैसे उसने कई पीढ़ियों की हथेलियाँ थाम ली हों। दादी ने उसके सरि पर हाथ फेरा। उत्तर अब बहुत पास था, फरि भी रात भर इंतज़ार करना था।



भोर की डायरी

सुबह डायरी के पन्ने अलग हो गए। आरव ने दादी के पास बैठकर उन्हें खोला। एक पन्ने पर बाल सभा की योजना थी। बच्चों ने लिखा था कि निर्ई सुबह पर उनकी छतें रंगों से भरेगी। किसी ने बड़े शब्द नहीं लिखे थे। वे पड़ोसियों को बुलाना, मठिई बाँटना और छोटी पतंगों की डोर साथ पकड़ना चाहते थे।

दूसरे पन्ने पर एक लड़की ने अपनी घबराहट लिखी थी। उसे डर था कि भोर में हवा बंद हो जाएगी और मुख्य पतंग उठेगी ही नहीं। नसीम ने उसे समझाया था कि डोर अकेले न पकड़ना। कई हाथ मलेंगे तो पतंग रास्ता पा लेगी। नीचे तरिगी पतंग का रंगीन चित्र बना था।

अगली पंक्ति पढ़ते समय दादी ने धीरे से साँस ली। उसमें लिखा था कि पतंग पहली कोशिश में छत की मुंडेर से टकराई। सब हँसे, फिर उसे सीधा कयि। दूसरी कोशिश में हवा मली। पतंग लाल कल्ले की ओर उठी और आसपास की छतों से तालियाँ सुनाई दीं। आरव ने दादी की आँखों में वही सुबह चमकते देखी।

अंतमि पन्ने का नचिला कोना गायब था। नाम का उपनाम उसी हस्से पर रहा होगा। बस एक वाक्य बचा था—अगली बार यह डोर मेरे घर का सबसे जज्जासु बच्चा पकड़ेगा। दादी मुस्कराई, पर उन्होंने अभी कुछ नहीं बताया। उन्होंने कहा कि अंतमि सुराग डायरी में नहीं, पतंग उड़ाने वाले हाथों में मल्लिगा।



उड़ान से पहले की रात

चौदह अगस्त की शाम आरव, मेहर और दादी छत पर तैयारी करने लगे। करीम चाचा की दी सूती डोर छोटी चरखी पर लपेटी गई। दादी ने पतंग की पुरानी कमानी के साथ हल्की सहायक तीली बाँधी, ताक भूल बाँस सुरक्षित रहे। आरव ने चावल की लेई से अंतमि फटा कोना जोड़ा और उसे धूप में सुखाया।

आसपास की छतें रोशनी और रंग से भर रही थीं। कहीं बच्चे हँस रहे थे, कहीं रेडियों पर पुराने गीत बज रहे थे। नीचे गलियों से समोसे, गुलाब और भीगी मट्ठी की मली-जुली खुशबू आ रही थी। मेहर ने पूँछ सुलझाते समय खुद को उसमें लपेट लिया। उसकी चाल देखकर दादी इतनी हँसी कि उनकी आँखें नम हो गईं।

दादी ने फरि नीले धागे से कमजोर टाँका मजबूत किया। उनकी उँगलियाँ बनिा रुके वही पाँच पंखुड़ियों वाला फूल बनाने लगीं। आरव ने ध्यान से देखा। यही चाल कपड़े की पट्टी पर थी। यही टाँके सरोज नाम में थे। उसने प्रश्न होंठों तक आने दिया, फरि रोक लिया। अंतमि सुराग को सुबह स्वयं बोलना था।

रात में पतंग को साफ़ कपड़े पर रखा गया। छोटी चरखी उसके पास थी। आरव को नींद देर से आई। उसे मसाला गली, नीला दरवाज़ा, कतिबों की दुकान और रील की हँसी याद आती रही। सारे सुराग एक डोर में बँध चुके थे। बस उसका अंतमि सिरि दादी की हथेली तक पहुँचना बाकी था।



दादी के हाथों में डोर

पंद्रह अगस्त की सुबह पुरानी दलिली की छतें भोर से पहले जाग गईं। आकाश हल्का गुलाबी था। कबूतर गोल चक्कर लगा रहे थे। दूर लाल कल्लि की दशा पर सुनहरी रोशनी फैल रही थी। आरव ने तरिगी पतंग उठाई। मेहर ने उसकी पूँछ संभाली। छोटी चरखी दादी के सामने रखी थी।

आरव ने चरखी दादी की ओर बढ़ाकर कहा कि इस बार डोर उन्हीं के हाथ में होनी चाहिए। दादी ने लकड़ी के पुराने हत्थे को पकड़ा। उनकी उँगलियाँ ठीक उन्हीं घसि नशानों पर बैठी, जैसे चरखी उनका इंतज़ार कर रही थी। उन्होंने पतंग की पूँछ पर कढ़ा नाम छुआ और बोली—सरोज मेरा बचपन का नाम था।

आरव की आँखें फैल गईं। दादी ने बताया कि 1947 की उस भोर में वह छोटी बच्ची थी। नसीम और दूसरे मतिरों के साथ उन्होंने यही पतंग उड़ाई थी। वह दिन उनके लिए केवल आकाश में रंग भेजने का नहीं था। वह पड़ोस की छतों, बाँटी हुई मठाई, मलि हुए हाथों और नई आशा को याद रखने का दिन था।

हवा चली। आरव दौड़ा और पतंग ऊपर उठ गई। दादी ने डोर थामी, फरि आरव की हथेली अपने हाथ पर रख ली। मेहर ने खुशी से ताली बजाई। फीके रंग सुबह की रोशनी में फरि चमकने लगे। आरव समझ गया कि पुरानी पतंग का रहस्य कसी छपि खजाने का नहीं था। खजाना वह डोर थी, जो दादी की कहानी को उसकी हथेली से जोड़ रही थी।





Plyx द्वारा 🇳🇴 में ❤️ के साथ बनाया गया



अपने digital और audio edition के लिए
scan करें